वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च – 2019

* व्याख्यान और आज्ञा के द्वारा पापाचरण से मोक्ष नहीं हो सकती
* हमारे वजूद में सबसे कीमती : आत्मा
* क्या स्वर्गीय वातावरण था देवाश्रम का
* मनुष्यात्माओं के आत्मिक जीवन की चार अवस्थाएं
* देव समाज का अनोखापन कहां है?
* बरसी की सभा
* पेट में होने वाले कीड़े कर सकते हैं – आंत में घाव

व्याख्यान और आज्ञा के द्वारा पापाचरण से मोक्ष नहीं हो सकती

(भगवान देवात्मा की बाणी)

वर्तमान वर्षों में किसी ने व्याख्यान दे दिया। कुछ लोगों ने तालिया भी बजा दी। परन्तु व्याख्यान कर्ता की इस आज्ञा का फल कुछ न हुआ। एक वर्ष चला गया, फिर वही अवस्था, कई वर्ष चले गए, दस, बीस वर्ष व्यतीत हो गए, परन्तु पापाचरण घटने के स्थान में बढ़ता ही जाता है। व्याख्यान होते हैं, आज्ञाएं दी जाती हैं, परन्तु सब निष्फल जाती हैं। यह पढ़े लिखे मूर्ख यह समझते हैं, कि लोगों को एकत्र करके व्याख्यान दे कर कुछ कहने और आज्ञा देने की देर है, और सब के पाप और दुराचार छूट जाएंगे। परन्तु प्रकृति के नियम इन लोगों की महा मूर्खता पर हंसते हैं, और इन नियमों के समुद्र के तट पर बैठा हुआ एक जन समुद्र को यह आज्ञा दे रहा था, कि अपनी लहरें आगे न भेज, मेरे कपड़े भीग जाएंगे, और समुद्र उस की आज्ञा को नहीं सुनता था, और अपनी लहरों को बन्द नहीं करता था, वैसे ही एक एक मनुष्य के भीतर जिन जिन नीच प्रवृत्तियों और वासनाओं और उत्तेजनाओं (नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं) की लहरें उठ रही हैं, और उसे अपने वेग से वशीभूत करे नीचे को ले जा रही हैं, और नाना प्रकार के उपरोक्त पाप ही नहीं, किन्तु उन से बढ़कर और सैंकडों पाप ऐसे करा रही हैं, कि जिन का उन्हें कुछ पता तक नहीं है, वह लहरें किसी की आज्ञा से बन्द नहीं होती। वह क्रमागत उठती हैं, और जिसके आत्मा पर वह जितना अधिकार लाभ कर चुकी हैं, उतना ही उस को, और तो और, एक-एक बार उसकी अपनी इच्छा के विरुद्ध भी पाप करने के लिए बाध्य करती रहती हैं। पापी का पतन होता जाता है, और वह अपने दुर्बल आत्मा के साथ इन नीच गतियों की प्रबल धार में उसी प्रकार विवश बहता चला जाता है, जिस प्रकार एक-एक वृक्ष की छोटी सी टहनी किसी नहर वा नदी की धार में बहती चली जाती हैं।

यदि किसी व्याख्यान वा आज्ञा देने से पापियों का परित्राण सम्भव होता, तो प्रत्येक गवर्नमेंट कम से कम अपने राज्य से विविध प्रकार के अपराधों को दूर कर देने के लिए, प्रत्येक ज़िले के आदमियों को इक्ट्ठा करके ईश्वर की बाणी के भिन्न अपनी राज्य विधि के साक्षात वचन सुना कर लोगों को अपराध रहित बना देती। वैशालय सब बन्द कर देती। कोई किसी पर अत्याचार न करता। और भीतर बाहर चारों ओर सुख और शान्ति का राज्य स्थापन हो जाता। परन्तु ऐसा नहीं

बाकि पृष्ठ 19 पर

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 3
मार्च – 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हमारे वजूद में सबसे कीमती : आत्मा

(एक सभा के आधार पर)

नेचर में बहुत से नियम काम कर रहे हैं उनको जानना और उनसे लाभ उठाना लाभ का सौदा हैं। नेचर में एक नियम विकास का नियम है। विकास के क्रम में भौतिक पदार्थों (पत्थर, पहाड़, धातु, सोना, चाँदी), वनस्पति जगत (पेड़-पौधों, फलों, फूलों), पशु जगत (चींटी, गाँय, शेर, व्हेल मछली) और मनुष्य जगत को विकसित करके उन्हें नये नये रंगों, नए नए रूपों और नयी योग्यताओं/क्षमताओं को पैदा किया और विकसित करता आ रहा है। इस सबको जानने और समझने की जरूरत है। जो जन विकास के नियम को नहीं समझेगें उन्हें देव समाज की और गुरू महाराज की भी ज्यादा समझ नहीं आ सकती। विकास के क्रम में ही एक एक वैज्ञानिक पैदा हुआ। उनकी विकसित मानसिक शक्तियों द्वारा एक-एक ऐसा तत्व खोजा गया कि उन नियमों/तत्वों की उससे पहले किसी को जानकारी नहीं थी। यहाँ तक कि हमारे धर्म-ग्रन्थों में भी बहुत सी बातों व सत्य नियमों का जिक्र तक नही था। जिस तरह भाप के अविष्कारक स्टीफनसन कहे जाते हैं हालांकि भाप पहले भी हमारे घर-घर में मौजूद थी परन्तु स्टीफनसन ने उसके कारज को देखा और इसके प्रयोग को आगे बढ़ाया। ठीक इसी तरह मानसिक विकास क्रम में ही बिजली, कम्पयूटर, हवाई जहाज आदि आदि खोजें होती गई और मनुष्य मात्र को इसका लाभ मिला।

विकास के क्रम में ही भगवान देवात्मा बिल्कुल निराली अदभुत योग्यताएँ और क्षमताएँ लेकर पैदा हुए हैं। उन्होंने ऐसी बातें बतायी हैं, जिनका उनसे पहले किसी को पता नहीं लगा और जिसके जानने के बगैर सारी इन्सानियत को घाटा है। सारे मनुष्य मात्र में हर एक मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपने आपको बहुत समझदार एवं पूर्ण ज्ञानी समझता है इसी कारण जब-जब किसी महान हस्ती ने मनुष्य मात्र से कोई अलग या उनके विचारों के विरूद्ध कोई बात की है तो सारा मनुष्य मात्र उन्हें खराब व अपना दुश्मन मानता है। श्री गुरू नानक जी, ईसा मसीह आदि अनेकों के साथ ऐसा ही हुआ है। विकास के क्रम में भगवान देवात्मा ने मनुष्य के आत्मा के बारे में जो खोज की व बताया वह उनसे पहले सारी दुनिया में

किसी को पता न लग सका। उन्होंने बताया कि मनुष्य के अस्तित्व में आत्मा सबसे कीमती वस्तु है, जिसका ज्ञान सारी दुनिया में अभी तक भी क्लीयर नहीं है। जब आत्मा का ही प्रकृत रूप पता नहीं था तो उसके जन्म-मरण, हानि-लाभ आदि का कैसे पता लगता और इसी कारण उसके हानि, नाश और मृत्यु की फिक्र भी कैसे होनी थी।

हमारी हस्ती में हमें सिर्फ शरीर और शारीरिक सुख नजर आते हैं इसीलिए हम स्वभाविक ही उन सुखों के पीछे पड़े हुए हैं। भिन्न-भिन्न धार्मिक स्थानों में जाते हुए, पूजा पाठ करते हुए भी हम नाना प्रकार के सुखों की तृप्ति और खोज में ही रहते हैं, यही हमारा स्वभाव है। लेकिन हमारी हस्ती में सबसे कीमती केवल शरीर नहीं कुछ और भी है। शरीर तो मुर्दे का भी होता है और उसमें सब अंग मौजूद होते हैं परन्तु एक सार व कीमती चीज़ होती है जिसके बिना जिन्दा शरीर मृत हो जाता है। बहुत जनों ने और अनेक धर्मों ने उसका नाम जरूर रखा है- आत्मा। परन्तु उसके स्वरूप का पता नहीं है, उसका विवेक नहीं हैं। इसके ज्ञान और विवेक और बोध के बिना हम सब मनुष्य दुःखी थे, दुखी हैं और दुखी रहेंगे। इसके सत्य ज्ञान और बोध के बिना अपना और दूसरों का सर्वनाश करते रहते है।

बड़े-बड़े महापुरुषों ने यह तो देखा और बताया है कि यह दुनियां दुखों का घर है जैसे कि श्री गुरूनानक देव जी ने, बुद्ध ने, यह भी बहुत बड़ी उपलब्धि है। लेकिन हमारे वजूद में सबसे कीमती चीज़ 'आत्मा' है, जिसका सब धर्मों में नाम तो आता है वह है क्या इसका सही विवरण कहीं भी नहीं है। किसी ने कहा है कि यह शस्त्र से कटती नहीं, पानी में गलती नहीं, हवा इसे सुखा नहीं सकती और यह किसी भी तरह मरती नहीं। किसी ने कहा है कि यह खुदा की फूँक है, खुदा का नूर है, किसी ने इसे देवत्व का शोला (डिवाईन बींईग), किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ बताया है। देवसमाज में आकर हम भी उसका नाम जानते हैं बता सकते हैं परन्तु उसे सबसे कीमती न जानते, न समझते और न ही देखते हैं।

आत्मा की वैज्ञानिक परिभाषा सुनकर, बुद्धि द्वारा समझकर और दूसरों को बताकर भी यह पता नहीं लगता, बोध नहीं होता कि मेरी 'आत्मा' सबसे कीमती है, इससे ही मेरा वजूद है, इसके बिना मैं शमशान हूँ। "जै घट आत्म विवेक न सो घट जान मसान"।

हमारे वजूद में हमारी यह आत्मा ही सबसे कीमती है, इसकी हानि सबसे बड़ी हानि, इसका घाटा सबसे बड़ा घाटा है और उसके बारे में सही जानकारी का न होना सबसे बड़ा अज्ञान और उसकी हानि-लाभ को न देख सकना सबसे बड़ी अन्धता हैं। मुँह से बता कर भी कि ये ये हानि हो रही है, अगर उस हानि और नाश से बचते नहीं तो यह सबसे बड़ी मूर्खता है।

आत्मा जीवनी शक्ति को कहते हैं यह सभी जिन्दा अस्तित्वों में मौजूद है। पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, मनुष्यों में यह जिन्दा शक्ति ही मुख्य है।

आत्मा एक गठन प्राप्त, शक्तिमय, जीवित अस्तित्व है जो मनुष्य के रोम-रोम में वास करता है। आत्मा (जीवनी शक्ति) के चार प्रकार के कार्य हैं - अपने जीने के लिए शरीर बनाना, उसको पालन करना, जिन्दा रखना और उसको चलाना (शासन

करना)। बाहरी शारीरिक बनावट में विकास के साथ साथ जीवनी शक्ति में भी विकास हुआ है जैसे पौधों के मुकाबले पशुओं में कुछ आरम्भिक बोध शक्तियों का विकास हुआ व हो रहा है। इसके अलावा मनुष्य में जो दुख-सुख के बोध आए व मानसिक शक्तियों के साथ मिलकर बढ़ते गये और बढ़ते-बढ़ते सुखों के अनुराग बन गये। हम सुखों के प्रति गहरा आकर्षण व दुखों के प्रति गहरे विकर्षण रखते हैं। सिर्फ मानसिक शक्तियों से ये तत्व समझ नहीं आऐंगे। वह 'आत्मा'/'जीवनी शक्ति', वह 'जान' जो सबसे कीमती है, वह तब तक हमें कीमती महसूस नहीं होगी जब तक परम पूजनीय भगवान देवात्मा की आन्तरिक ज्योति और तेजमय प्रभाव हम तक नहीं पहुँचते क्योंकि उनसे पहले आत्मा के सम्बन्ध में सारी बातें कल्पना व मिथ्या मूलक थी। भगवान देवात्मा ने ही गहरे आत्मिक अनुसंधान में आत्मा के जन्म व मरण और विनाश व विकास तत्वों को देखा, महसूस किया और मनुष्य मात्र पर जाहिर किया। उनके प्रभावों के बिना हम आत्मा-आत्मा कहकर भी न उसे कीमती महसूस करके उसके विनाश को जान सकते हैं और न ही उस बेहद कीमती वस्तु की रक्षा और विकास कर पाते हैं।

जैसा ऊपर बताया गया है परम पूजनीय भगवान देवात्मा की वैज्ञानिक खोज के अनुसार आत्मा गठन प्राप्त, शक्तिमय, जीवित अस्तित्व है। अब प्रश्न है कि आत्मा की गठन में कौन कौन सी शक्तियां हैं, जो उसे चलाती है, शरीर तो केवल माध्यम है। मानसिक शक्तियों को तो हम कुछ समझते हैं, परन्तु भाव शक्तियों का जो आत्मा की मुख्य रूप से परिचालक हैं, उनके विषय में मनुष्य जगत पूर्ण अन्धकार की अवस्था में हैं। मनुष्य की परिचालक यही भाव शक्तियां हैं, न कि कोई ईश्वर, परमात्मा या वाहगुरू आदि।

यह भाव शक्तियां क्या है?

(1) शरीर सम्बन्धी शक्तियां (i) स्वाद अनुराग (ii) आलस्य अनुराग (iii) काम or Sex का अनुराग, (iv) नशा अनुराग

इनमें से जो 2 वासना वा अनुराग मनुष्य में जिस जिस मात्रा में बढ़ जाते हैं, वह उसी मात्रा में गतियां करने के लिए बेबस होता है। बदपरहेज़ बनता है, आलसी होकर अपने कर्तव्य कर्मों को पूरा नहीं कर सकता, नशे से शरीर, सन्मान वा धन की हानि उठाता है, झूठा और चोर बनता है। सैक्स का दास होकर भयानक बलात्कार जैसी लीला पैदा करता है। यह शक्तियां मनुष्य के आत्मा की गठन में हैं। इनको इनके भयानक फलों को जानना मनुष्य के वश में नहीं।

(2) अहं सम्बन्धी सुख अनुरागों की शक्तियां :-

(i) प्रशंसा सुख अनुराग (ii) मान सुख अनुराग (iii) बड़ाई सुख अनुराग (iii) स्वार्थ सुख अनुराग की शक्तियां।

यह सब शक्तियां ही हैं, जो मनुष्य को मान बड़ाई पाने के लिए तरह 2 के नाच नचाती हैं। इनकी भूख मनुष्य को झूठी वाह वाह पाने के लिए कई बार घर बार बर्बाद करने के लिए विवश कर देती है। दूसरों के सामने अपनी बड़ाई करने में ही उसे तृप्ति मिलती

है। वह आपके मुंह वा लेखों से अपनी वा अपने सम्बन्धित जनों की प्रशंसा करके सुख प्राप्त करता है।

स्वार्थ के कारण जो घर घर, देश देश में नर्क छाया हुआ है, वह किसी से छुपा हुआ नहीं। बेईमानी, रिश्वत खोरी, अपहरण, झूठ, मक्कारी स्वार्थ सिद्ध करने के लिए होती है, स्वार्थ की शक्ति मनुष्य मात्र में इतनी गहरी है कि निकटी से निकटी रिश्तें में भी अन्याय करने से मनुष्य नहीं रुकते। घर, सोसाईटीज, देश बुरी तरह इसकी गरिफत में है।

इसके भिन्न मनुष्यों में सन्तान सुख, बहुत गहरा है। यह शक्ति सन्तान की बड़ी से बड़ी गल्ती भी देखने नहीं देता। राजनैतिक लीडरों, बड़े पदाधारियों, पुलिस वालों रसूखदारों के बच्चे जिस प्रकार खुल्मखुल्ला गुंडागर्दी करते हैं, माता पिता उन्हें कुछ कहने की जुर्रत नहीं करते, उल्टा उनकी ग़लत आदतों को पनपने देते है और फिर उनके हाथों स्वयं ही दुःखी होते हैं।

इसी प्रकार धन के अनुराग की शक्ति से तो कोई बिरला ही बचता है। धन प्राप्ति के लिए जो-2 झूठ बोले जाते हैं, जो गुनाह होते हैं, वह भी जग जाहिर हैं। पब्लिक के धन को राजनैतिक लीडर वा उद्योगपति अपने लिए हर सम्भव तरीके से इक्ट्ठा करते हैं और कितने जुल्म गरीबों के हकों को अपहरण करने में नहीं किए जाते है। इसके भिन्न हिंसा, ईर्षा, द्वेष उतेजना मूलक शक्तियां भी मनुष्य की परिचालक है। इसके भिन्न अच्छे भावों, सेवा, परोपकार की शक्तियां भी कहीं 2 हैं।

इससे स्पष्ट है कि मनुष्य जो चिन्ताएं वा क्रियाएं करता है, वह उसके आत्मा की शक्तियां करवाती हैं। जिनको परम पूजनीय भगवान ने खोजा है, दिखाया है और अधिकारी आत्माओं का किसी सीमा तक नीच शक्तियों से उद्धार किया है। उनके भीतर किसी सीमा तक उच्च भाव शक्तियां पैदा की हैं।

नोट :- हम कोशिश करेंगे कि इन शक्तियों को एक 2 करके विस्तार से धर्म जीवन में दें।

काश अगर बच्चा ही रहता मैं,
सोचता हूं कितना अच्छा ही रहता मैं।।
हिंदू बनता ना मुसलमान बनता मैं
कोई गम मेरी आंख नम नहीं करता,
कोई मजहब मेरी खुशियां कम नहीं करता
कोई मुझे ऐसा वरदान दे दे
इसांनों सा मेरे सीने में ईमान दे दे।।
कभी मेरे कदम लड़खड़ाने मत देना,
बेकसूरों पर जुल्म ढानें मत देना ।
मेरा बचपन अगर तू लौटाना नहीं चाहता,
मुझको मासूम फिर से बनाना नहीं चाहता।।
फिर मुझे तू बिल्कुल नादान बना दें,
कोई मुझे इंसान बना दे

क्या स्वर्गीय वातावरण था देवाश्रम का

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी लिखते हैं -

दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद मुझे देवाश्रम लाहौर में रहने का महा सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं उस समय एफ० ए० में पढ़ता था। कालिज के कुछ घण्टे गुजारने के बाद बाकी दिन रात का प्राय: सब समय देवाश्रम में गुजरता था। भगवान देवात्मा और उनके कर्मचारी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान अमर सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान भाई मोहन देव जी, श्रद्धेय श्रीमान हरिनारायण जी अग्निहोत्री आदि कम या अधिक समय वहां पर ही रहते थे। भगवान देवात्मा के प्रतिदिन दर्शन करने का महासौभाग्य प्राप्त था। उनकी देव बाणी सुनने, उनकी सेवा में उपस्थित होने, उनके वास स्थान में उपस्थित होने और उनकी छोटी मोटी सेवा करने का महा उच्च अधिकार प्राप्त था।

उपरोक्त उच्च जीवनधारी कर्मचारियों के प्रतिदिन के जीवन के देखने का सौभाग्य था। उनके जीवनों से बहुत उच्च असर मिलते थे। वह कर्मचारी भगवान की रक्षाकारी और जीवन दायक दृष्टि के नीचे रहते थे। उन्हें अपने निज के साधनों, अपने जिम्मे के कामों को बेहतर से बेहतर और सख्त परिश्रम से करने, अधिक से अधिक हितकर काम अपने जीवनों से निकालने, सभाएं कराने, लोगों की विजिट करने, किताबें बेचने, लोगों को सत्संग में लाने और चारों जगतों की सेवा करने का ध्यान था। इसलिए थोड़े से आदमी होकर भी इतना काम अपने जीवन से निकालते थे और इस कदर उच्च कोटि का काम करते थे कि जिसका शब्दों में ब्यान नहीं हो सकता। कर्मचारियों के कमरों में शुभ कामनाओं की गूंज उठती थी। उच्च प्रभावदायक गीतों का गान होता था। यह लोग अपने कमरे आप साफ करते थे। देवाश्रम के सेहन, नालियों और हाल कमरों की सफाई का काम करते थे। दफ्तरों का काम जमकर करते थे। अखबारों के लिए लेख लिखते थे। जोरदार सभाएं कराते थे। क्या बताएं क्या-क्या करते थे। उनके जीवन का शायद ही कोई पल किसी उच्च क्रिया के बगैर गुजरता हो। उन्हें अपने आराम की परवाह न थी। यही धुन समाई हुई थी कि भगवान देवात्मा की प्रसन्नता प्राप्त हो। एक दूसरे से उच्च मेल से रहने का दृश्य स्वर्गीय दृश्य था। हरेक दूसरों की सेवा करना अपना सौभाग्य समझता था और सेवा कराने की चिन्ता से भी कोसों दूर भागता था। सब एक दूसरे के सुख दु:ख में साथी थे, हमदर्द थे। दूसरों की उचित आवश्यकताओं को पूरा करने और कठिनाईयों को दूर करने में सच्चे, सेवाकारी थे, हां एक दूसरे पर जान देते थे। दूसरों के गुणों और अपनी कमियों को देखते थे। किसी के सम्बन्ध में कोई अनुचित क्रिया तो एक ओर चिन्ता गुजर जाने पर भी बहुत दुख और पछतावा होता था, एक दूसरे से अफसोस का प्रकाश होता था।

उस समय देवाश्रम में जो सेवक सेविका रहते थे, वह भी इसी भावना से कम व अधिक परिचालित होते थे। वाह! क्या ही स्वर्गीय दिन थे, ऐसे उच्च वातावरण में रहकर जो उच्च बरकतें प्राप्त की, जो जीवन दान पाया, जो पवित्र खुशी प्राप्त की, उसकी

याद ही दिल में अजीब हालत पैदा कर देती है। उस समय देवाश्रम में रहने का सौभाग्य न मिलता, तो वह बरकतें प्राप्त न होतीं जो अब प्राप्त हैं।

कालिज में इसलिए दाखिल हुआ था, कि वहां की शिक्षा समाप्त करने पर डाक्टर बनूंगा, इन्जीनियिर बनूंगा, रियासत का वज़ीर या सलाहकार बनूंगा। परन्तु इस रक्षाकारी जीवनदायक उच्च मण्डल में रहते हुए नीच लक्ष्य उच्च लक्ष्य, में बदल गए। जीवन और परोपकार का जीवन व्यतीत करने वालों ने दिल को मोह लिया। भगवान के प्रेमकों ने भगवान देवात्मा का बनने और संग्राम करने में डाल दिया। स्वार्थ की बजाए परोपकार और आप जीवन से निकल कर उच्च जीवन लाभ करने का आकांक्षी बना दिया। वाह! खाक को ज़र कर दिया, धूल से सोना बना दिया। नीच लोक से निकाल कर उच्च लोक में जा बिठाया। इन असरों ने मेरे जीवन में सच्ची करामात कर दिखाई। (सत्यदेव सम्वाद 18 जून सन! 1948)

<u>एक नई जागृति</u>

देवाश्रम में रहते हुए, वहां के असरों से प्रभावित होकर श्रीमान जी जब बी.ए. में पढ़ते थे तो उन्होंने लिखा था -

हे भगवन! मैं अपने आत्मा के हित के विचार से बिल्कुल अबोधी और अन्धा हूं। आपकी ज्योति में मुझे अपनी असल अवस्था बहुत कृपा-पात्र और नीच दिखाई देती है। इसको देखकर दुख होता है।..... मैं नीच वासनाओं, उतेजनाओं और पशु प्रवृतियों का पुतला हूं और उच्च शक्तियों से खाली हूं। मेरे भीतर गलने, सड़ने और मरने के सामान मौजूद हैं। ऐसे सामान नहीं कि जो मेरे आत्मा को सरस और हरा भरा बना सकें। हे जीवन दाता! जब मैं आपकी ज्योति और शक्ति से खाली रहता हूं तो मेरी अवस्था मुर्दा लाश की न्याई हो जाती है।..... मेरे भीतर के उच्च भाव और उच्च कामनाएं मर जाती हैं। जो शुभ मेरे आत्मा से निकल सकता है वह निकलना बन्द हो जाता है। हां मेरी आंखों के सामने से मेरा हित ही छुप जाता है। मेरी वासनाएं और उत्तेजनाएं मेरे अस्तित्व को गन्दा और बदबूदार बनाने का काम शुरु कर देती हैं। मेरे भीतर मैल इक्ट्ठा होने लगती है और मैं नाना प्रकार से नाना सम्बन्धों में हानिकारक प्रमाणित होने लगता हूं। तब हे भगवन! आपकी जीवन ज्योति और शक्ति का मेरे आत्मा के साथ जान और प्राण का सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध हो तो मेरा आत्मा सच्चे अर्थों में जीवित, यदि वह न हो तो मुर्दा। आपकी जीवन दायनी ज्योति और शक्ति यदि मेरे साथ हो, तो मैं वह मूल्यवान वस्तु प्राप्त करता हूं कि जिसकी तुलना में संसार का कोई पदार्थ कुछ हकीकत नहीं रखता।..... बार बार यह कामना उठती है कि मेरा मुंह आपकी ओर रह सके। और अन्य सम्बन्धी और सामान आपकी तुलना में तुच्छ नज़र आ सकें। आपका आर्शीवाद मांगता हूं।

आपका कृतज्ञ सेवक
ईश्वर सिंह
(जीवन तत्व 31 मार्च, 1907)

<u>आपका सम्बन्ध मेरे लिए जान और प्राण का सम्बन्ध है :-</u>

अपनी कालिज की पढ़ाई के लिए श्रीमान जी कई वर्ष देवाश्रम में रहे थे। वहां रहते हुए उन्होंने महसूस किया कि भगवान देवात्मा का सम्बन्ध उनके

लिए जान और प्राण का सम्बन्ध है। उनके प्रभाव मिलें, तो आत्मा हरा भरा और सरस रहता है और न मिलें तो हृदय शुष्क और कठोर हो जाता है। इस विषय में श्रीमान जी अपने एक दिन के साधन में इस प्रकार अनुभव करते हैं :-

मेरे परम हितकारी और उपकारी महामान्य पूजनीयवर श्री देवगुरु भगवन्!

आपके श्री चरणों की पवित्र और हितकर धूल में सिर रखकर प्रणाम करता हूं और आपका शुभार्शीवाद दान मांगता हूं। हे जीवन दाता! आपका सम्बन्ध मेरे लिए जान और प्राण का सम्बन्ध है। उसको मैं आपकी अपार कृपा से देखने के योग्य होता जाता हूं। आपके श्री चरणों की और मेरा ध्यान रहे, तो मै आपके दरबार से ऐसी शक्ति और रस प्राप्त करता हूं कि जिसको पाकर मैं भीतर और बाहर की विनाशकारी शक्तियों और विनाशकारी प्रभावों से रक्षा पाता हूं और अपने भीतर उच्च भावों और उच्च आकांक्षाओं की लहरें जोश भरती हुई महसूस करता हूं। इसके विरूद्ध जब आपका पाप विनाशक और हित विकासक रुप मेरे सामने से छिप जाता है, या बहुत कम ध्यान उसकी ओर जाता है, तो मेरी जो दुरावस्था होती है, उसे सामने लाकर मेरी आंखों से आँसुओं की धारा जारी हो जाती है। मेरी अवस्था पशुओं जैसी और उससे भी बदतर हो जाती है। खाने, पीने, सोने जागने या शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने आदि के सिवाए मुझे कुछ नहीं सूझता। मेरे अन्दर की रुचियां और वासनाएं अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं में लगा कर मेरी गति पशुओं से भी बदतर बना देती हैं। मैं अपने आत्मा के हित और अहित से बिल्कुल अन्धा और बेसुध हो जाता हूं। जो साधन करता हूं वह केवल रस्मी साधन होने लगते हैं और फिर धीरे धीरे वह रस्मी साधन भी छूटने लगते हैं। मैं अपनत्व का दास औरों के उचित सुख और आराम को भूल जाता हूं और उनके लिए नाना प्रकार से हानिकारक प्रमाणित होने लगता हूं। मैं अपने प्रतिदिन के तजरूबे से यह साफ तौर से देख रहा हूं कि जिस दिन मेरा ध्यान आपके श्री चरणों की ओर रहता है उस दिन मैं अहित से बचने और हित की ओर जाने के लिए नाना प्रकार से चिन्ता और गति करता हूं। उस दिन मेरे हृदय को स्याह और गन्दा कर देने वाली चिन्ता या तो पैदा ही नहीं होती या यदि पैदा होती है, तो आपके पाप विनाशक रुप की झलक सामने आने से बिल्कुल दूर हो जाती है। जिस दिन मेरा ध्यान आपके श्री चरणों की ओर नहीं रहता, तो फिर मेरे आत्मा की बहुत बुरी अवस्था होती है।

आज आपके महान हितकर रुप के दर्शन न करने और आपके श्रीचरणों की ओर ध्यान न ले जाने के कारण मेरी बहुत दुर्गति हो रही है। मेरा हृदय बहुत खुश्क और उदास है। मैं बहुत बेचैन हूं। साढ़े आठ बजे के लगभग सोने की कोशिश की, परन्तु मैं अन्दर की बेचैनी से छुटकारा न पा सका। लाचार गयारह बजे के लगभग उठ बैठा और अपनी इस उदासीनता और बेचैनी को दूर करने के लिए आपके दरबार मैं बहुत दीन भावी होकर रो-रो कर प्रार्थना की। मैंने आपकी शक्ति से परिचालित होकर पत्र लिखना आरम्भ किया और अब साढ़े बारह बजे इसको समाप्त करता हूं।

भीतर से यह जोरदार कामना पैदा होती है कि मैं आपके पाप विनाशक और हितविकासक देवरुप के दर्शन करने और उस पर मोहित होने से अधिक से

अधिक योग्य हो सकूं। आपका अधिक से अधिक आर्शीवाद मुझे प्राप्त हो आपकी शक्ति मेरे साथ हो

आपका तुच्छ सेवक

ईश्वर सिंह

(जीवन तत्व 31 अक्तूबर 1907)

देव प्रभावों को पाकर श्रद्धेय श्रीमान जी ने और क्या देखा और लिखा :-

<u>आपकी ज्योति दिखाती है कि मेरे आत्मा का कमरा बहुत स्याह है</u>

हे सद्गुरु! इन दिनों मुझे पिछले साल की दीवाली की रात विशेष कर याद आती रही है, जब कि आपने यह बताया था, कि कोई कमरा कैसा ही सजा हुआ हो, उसमें कैसी ही खूबसूरत और कीमती चीज़े रखी हुई हों, उसमें कैसे ही रंगबिरंगे के शीशे हों, उसकी छत सुनहरी हो, परन्तु उसके अन्दर यदि किसी किस्म की रोशनी न हो, तो उसमें दाखिल होने वाला उसके खूबसूरत और सुन्दर नजारे को नहीं देख सकता, और किसी किस्म की प्रसन्नता या खुशी लाभ नहीं कर सकता। सिर्फ यही नहीं, कि वह खुशी हासिल नहीं कर सकता, बलिक अन्धेरे के कारण वह उस कमरे की विविध चीज़ों से टकराता फिरेगा। और उस टकराहट का नतीजा यह होगा, कि वह वहां की निहायत कीमती और नाजुक चीज़ों को तोड़ फोड़ देगा, और खुद भी कई चोटें खाकर जख़्मी होगा। अगर उस कमरे में खूबसूरत चीज़ों की बजाए सांप और बिच्छु हों, तो वह बेचारा उनका शिकार होगा। और फिर आपने बताया था, कि जिस तरह से बाहर की दुनियां में रोशनी का यह नियम सच्चा है, और उसकी बहुत बड़ी जरूरत है, ठीक उसी तरह से धर्म जगत में धर्म की सुन्दर और मोहनी तस्वीर को देखने और दिखाने के लिए धर्म ज्योति की बहुत जरूरत है।

हे भगवान्! आपका यह पवित्र और प्रभावशाली दृष्टांत इस साल कई बार मेरे सामने आता रहा है, और आपकी अद्वितीय जीवन ज्योति की महानता को दिखाने के लिए बहुत ही हितकर साबित हुआ है। मेरे सामने यह बिल्कुल साफ हो चुका है, कि मुझे अपने आत्मा के कमरे को देखने के लिए धर्म दाता की धर्म ज्योति मेरे दिल की कमरे में दाखिल होने का अवसर पाकर मुझे यह दिखाती रही है, कि मेरे आत्मा का कमरा बहुत काला है। उसके अन्दर वासनाओं के जहरीले बिच्छु और सांप वास करते हैं। वह सब मेरा सत्यानाश कर रहे हैं। मेरे विविध ताकतों को नष्ट करते जाते हैं। और यह भी नज़र आता है, कि जो उच्च भाव मैं बीज रूप में अपने मां बाप से लेकर पैदा हुआ था, उनको भी इतनी मुद्दत अन्धेरे में वास करने से बहुत हानि पहुंची है। जब तक आपकी ज्योति मेरे आत्मा के कमरे में रहती है, मैं उन वासनाओं और उत्तेजनाओं को देखता हूं। उनकी विनाशकारी कारवाई को महसूस करता हूं, उनसे बचने की कोशिश करता हूं, और उनको मार कर अपने दिल के कमरे से निकालने का यत्न और उपाय करता हूं, और जो उच्च भाव अपने भीतर प्रतीत होता है, उसकी रक्षा और उन्नति के लिए कोशिश करता हूं। मगर हाय! जब वह महान जीवन ज्योति नहीं रहती, तो यह सब तस्वीर छिप जाती है। वह वासनाएं और उत्तेजनाएं मुझे खाने लगती है। उनका ज़हर चढ़ने लगता है और मुझे अपनी भलाई बुराई की कोई सुध नहीं रहती। रोशनी से

वंचित होने के कारण अनाप शनाप चलने लगता हूं, और जो कोई उच्च भाव अन्दर मौजूद होता है, उसकी हानि होती है। मेरा कोई साथी या रिश्तेदार (जो आप की रोशनी को मुझ तक पहुंचाने की सामर्थ्य नहीं रखता) मेरे लिए उस हालत में मददगार साबित नहीं हो सकता। मेरा अपना विचार काम नहीं आता। मेरा अपना साधन मेरे लिए असली तौर पर हितकर प्रमाणित नहीं होता। तब मेरी कैसी नाजुक हालत! आपकी धर्म रोशनी मेरे लिए किस कदर कीमती और जरुरी! मेरा उसके साथ किस कदर गहरा सम्बन्ध! और जो धर्म की रोशनी के अद्वितीय सूर्य हैं, उनके श्री चरणों में अपनी बाकी तमाम जिन्दगी को बसर करना मेरे लिए किस कदर आवश्यक!!

मैं अभी तक दो ही तरह से आपको रोशनी को हासिल करने के योग्य हुआ हूं, अर्थात या तो साक्षात आपके श्री चरणों में बैठ कर आपकी रोशनी को हासिल करता हूं और या आपके किसी उच्च श्रेणी के सेवक की संगत से इस रोशनी को पाता हूं। मैं आपसे दूर रह कर या ऐसी संगत से वंचित रहकर खुद आपकी रोशनी को पाने के लायक नहीं हुआ। तब हे भगवन!! जब तक मैं खुद व खुद आपसे दूर रहकर (जिसमानी तौर से) भी आपकी रोशनी पाने के योग्य न हो सकूं तब तक यह दोनों दरवाजे मेरे लिए खुले रह सकें। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, और आपका ऐसा आर्शीवाद दान मांगता हूं।

देवाश्रम आपका कृतज्ञ सेवक

15 अक्तूबर सन! 1905 ईश्वर सिंह

'जीवन पथ' चैत्र 1962 वि०

मनुष्यात्माओं के आत्मिक जीवन की चार अवस्थाएं

इस प्रकार की प्रकृति रखने वाले करोड़ों मनुष्य जिस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं, वह सारे का सारा जीवन मैला, गन्दा, और पलीद जीवन होता है। इस प्रकार का पशुओं से भी बदतर जीवन रखने वाले जन दुराचारी या दुष्ट जन कहलाने के योग्य हैं, चाहे वह कितने भी धनाड्य, कितने ही पदवी रखने वाले हों, कितने ही विद्वान हों, कितने ही रईस या राजा हों, नवाब हों या महाराजा हों, स्त्री हों या पुरुष हों, और किसी भी मज़हब के साथ सम्बन्ध रखते हों, यही दुराचारी दुष्ट जन स्थूल देह त्याग के बाद घटिया सूक्ष्म शरीर बना कर भूत प्रेत बन जाते हैं और इसी पृथ्वी के साथ बन्धकर रहते हैं। ऐसे दुष्ट और दुराचारी जन अधम लोक के वासी कहे जाते हैं। इस लोक में भी ऐसे दुष्ट और दुराचारी जन अपने गन्दे जीवन के कारण अनुचित दुःख भोगते हैं, परन्तु मरने के बाद तो वह जिस प्रकार निदारुण दुःख पाते हैं, उनका बयान नहीं हो सकता।

देव समाज में ऐसे दुष्ट और दुराचारियों के लिए कोई स्थान नहीं। देव समाज में वही जन प्रवेश कर सकते हैं, कि जिन्होंने पशु बध के महा पाप से छुटकारा पाया हो। और न केवल अपने लिए मांसाहार त्याग किया हो, किन्तु किसी और को मांसाहार न कराते हों। और डाक्टर होकर न किसी और को मांसाहार का मशवरा देते हों। देव समाज में वही जन

प्रविष्ट हो सकता है, कि जो सब प्रकार के नशों से मुक्त हो चुका हो। जो जुआ न खेलता हो, जो रिश्वत न लेता हो, जो लेन देन के सिलसिले में किसी प्रकार की बददयानती न करता हो। जो बदचलनी न करता हो, और जिसने यह प्रतिज्ञा की हो, कि अपने विवाहित साथी के जीते जी दूसरा विवाह नहीं करेगा आदि-आदि। देव समाज में आकर और रहकर मनुष्य दुष्ट और दुराचारी जीवन से बहुत कुछ मोक्ष पा जाता है और शरीफ मनुष्य कहलाने के योग्य हो जाता है। दुष्ट और दुराचारी जीवन रखने वाले जनों से ऊपर शरीफ़ मनुष्यों की श्रेणी है। शरीफ मनुष्यों की पदवी रखने वाले मनुष्य भी दुनियां में बहुत थोड़े है। दुनियां में मांसाहार, नशों का सेन, व्यभिचार और नाना प्रकार की ठग्गी का बाज़ार इस कदर गर्म है, कि देव समाज के नियत आठ पापों से मुक्त जन ढूंढने पर भी कहीं-कहीं मिलेंगे। आत्मिक जीवन के नियमों से अन्धे होकर या रहकर करोड़ों जन किस कदर अपने आत्मा की हत्या कर रहे हैं और गन्दे और मैले जीवन की सभ्यता का जीवन समझ रहे हैं, उसका दृश्य बहुत दर्दनाक है।

इस दूसरी श्रेणी से ऊपर एक तीसरी श्रेणी है। वह उन जनों की श्रेणी है, जिनको त्यागी कहते हैं। यह जन धन का त्याग कर देते हैं, जायदाद का त्याग कर देते हैं, सांसारिक पदवी का त्याग कर देते हैं। इस प्रकार के त्याग करके यह सच है, कि वह स्थूल प्रकार के पापों और दुराचारों से मुक्त हो जाते हैं। परन्तु व जीते हैं तो अपने सुख के लिए जीते हैं, यह जन दुराचारी नहीं, दुष्ट प्रकृति रखने वाले नहीं, केवल भद्र नहीं, बल्कि सांसारिक पदार्थों से भी मुंह मोड़ कर त्यागी बने हुए हैं। इन जनों ने संसार से मुंह मोड़ा, परन्तु अपने आप से मुंह नहीं मोड़ा। दुनियां के महलों का त्याग करके आए, परन्तु जिस आश्रम में पहुंचे, उसके कमरे के साथ इस कदर बन्ध जाते है, कि उसको छोड़ नहीं सकते। अपने घर के पलंग छोड़ आते हैं, परन्तु आश्रम की चारपाई से बन्ध जाते हैं। आश्रम की अलमारी के साथ बन्ध जाते हैं। बड़ा सरकारी पद छोड़ जाते हैं, परन्तु उस आश्रम में राज्य करना चाहते हैं। अपनी मैं के साथ बन्धकर, अपने कमरे के साथ बन्धकर, अपनी छोटी-छोटी वस्तुओं के साथ बन्धकर, वह कई सूरतों में इस कदर दुःख पाते हैं, कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता है। मेरे सामने की बात है, कि दो सन्यासी एक धर्मशाला में एक स्थान के लिए आपस में झगड़ पड़े। डण्डों की नौबत आ गई। ऐसे त्यागी जन अपनी मैं से अन्धे होकर और अपनी आस्तीनें चढ़ाकर एक दूसरे को मारने के लिए तैयार हो जाते हैं। जब तक मैं का त्याग नहीं होता, तब तक बाकी त्याग भी अपनी शोभा नहीं दिखा सकते। इस तीसरी श्रेणी के जन पहली दो श्रेणियों से विशेषता रखते हैं, परन्तु फिर भी सुक्ष्म अन्याय और सूक्ष्म अत्याचार से रहित नहीं। इस तीसरी श्रेणी वालों के साथ पहली और दूसरी श्रेणी वालों का कोई मुकाबला ही नहीं। इस तीसरी श्रेणी के जन अपने स्थूल शरीर के बाद परलोक में उच्च लोकों में वास करने के योग्य हो जाते हैं।

इस तीसरी श्रेणी से ऊपर चौथी श्रेणी है। इस श्रेणी के जन जीवन के असल लक्ष्य को प्राप्त करने का अधिकार लाभ करते हैं। यही जन अपने आत्मा की उस अवस्था को लाभ करते हैं, कि जिसमें प्रवेश

करके वह नेचर के नाना जगतों के नाना अस्तित्वों के सम्बन्ध में कम से कम हानिकारक और अधिक से अधिक सेवाकारी प्रमाणित होते हैं। यह जन "मैं" के गढ़े से निकल कर "पर" के पवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं। इन्हीं को ही सात्विक जीवन धारी कहा जाता है। यही जन विशुद्ध प्रेम के वश होकर एक और जीवनदाता भगवान् देवात्मा के साथ जीवन्त रूप से जुड़ जाते हैं, और दूसरी ओर विकास के नियम के साथ जहां तक सम्भव हो एकाकार हो जाते हैं। यही जन देव राज लाने वाली जंग में सच्चे सिपाही और जरनैल बन जाते हैं। और स्थूल देह त्याग के बाद बहुत सुन्दर सूक्ष्म शरीर बनाकर सूक्ष्म पृथ्वी के सूक्ष्म से सूक्ष्म उच्च लाकों में वास करने का अधिकार पाते हैं।

(10.8.47 सोलन)

देव समाज का अनोखवापन कहां है?

देव समाज ही एक ऐसी धर्म समाज है, कि जिस को प्रचलित मतों के मुख्य विश्वासों पर किसी प्रकार का विश्वास नहीं। देव समाज खुदा या परमात्मा को नहीं मानती, देव समाज ईश्वर को नहीं मानती, देव समाज ब्रह्म व परमात्मा को नहीं मानती, देव समाज दुनियां के कुल माबूदों को मिथ्या माबूद मानती है। देव समाज किसी इलहामी पुस्तक को नहीं मानती। जब कोई खुदा वा परमात्मा है ही नहीं, तो इलहाम काहे का। देव समाज सब कहलाने वाली पुस्तकों वा ग्रन्थों को मनुष्य रचित मानती है। देव समाज न नरक को मानती है, न पुनर्जन्म को मानती है, न आवा-गमन को मानती है, देव समाज यह नहीं मानती, कि मनुष्यात्मा आरम्भ से ही अमर है, देव समाज किसी नदी व हादी की सिफारिश को नहीं मानती, देव समाज सब प्रचलित मतों के मुक्ति के विश्वासों को मिथ्या मानती है, इसी प्रकार प्रचलित मतों के माबूदों पुस्तकों, विश्वासों और उनकी बुनियादी शिक्षाओं को एक बहुत बड़ा अधर्म मानती है। इस अंग में भी देव समाज अनोखी समाज है। अब यहां पर यह प्रश्न पैदा होता है कि देव समाज प्रचलित मतों के दिए हुए डरों और लालचों को छोड़कर किस कारण से अपने आप को धर्म समाज मानती है, अपने आप को सत्य धर्म की शिक्षक मानती है, और अपना अनोखा या आश्चर्य कार्य करती है। इतना तो सच है, कि देव समाज ही दुनिया में एक ऐसी समाज है कि जिस में प्रवेश करने की शर्त निराली है। देव समाज न केवल मिथ्या विश्वासों से अधिकारी आत्माओं को मुक्त करके उन्हें अपनी शरण में लेती है, किन्तु उन से वह आठ पाप छुड़ाती है, कि जिन के करने से दुनिया जहंन्नुम का नमूना बनी हुई है। देव समाज उनको ही अपनी शरण में लेती है, कि जो मांस, अण्डे और उनकी बनी चीजें न खाते हों, जो सब प्रकार के नशों से आज़ाद हों, जो चोरी, जुआ और बददयानती से मुक्त हों, जो अमानत में ख़यानत न करते हों, जो किसी का कर्जा न दबाते हों, जो व्यभिचारी न हों, जो विवाह सूत्र में बन्धे हुए अपने साथी के जीते जी दूसरा विवाह न करते हों, जो

किसी जीवधारी को बिना किसी उचित कारण के वध न करते हों, आदि-आदि।

हमने सारे ईश्वर विश्वासियों को कई बार चेलैंज दिया है, कि तुम सब मिलकर और अपने परमात्माओं को मिलाकर इस प्रकार की पवित्र धर्म समाज पैदा करो। ऐसी पवित्र सोसाईटी पैदा करने के लिए कुल प्रचलित मत असमर्थ हैं यहां तक कि एक एक खुदा परस्त सोसाईटी का लीडर दुनियां के सामने लेख के द्वारा यह प्रकट करता है, कि उनकी सोसाईटी में 95 प्रतिशत जन नाना प्रकार के स्थूल पापों से फंसे हुए है। क्या ऐसी सोसाईटी धार्मिक सोसाईटी कही जा सकती है? धर्म जीवन को मुख्य रखकर दुनियां में कोई समाज या मजहब नहीं है। इसलिए दुनियां के सारे प्रचलित मत धर्म जीवन के विचार से पूर्णत: अधर्म जीवन रखने वाले हैं। देव समाज ही एक ऐसी समाज है, कि जिसके भीतर ऐसी सैकड़ों परिशोध की घटनायें पैदा हो चुकी है, कि जिनके कारण बोधी जनों ने अपने पापों के भिन्न पैसों के सम्बन्ध में किये हुए पापों का गैर मामूली तौर से परिशोध किया है। उन्होंने हज़ारों रुपये उनके असल मालिकों को वापिस किये हैं। इसके भिन्न देव समाज ही एक ऐसी सोसाईटी है, जिसमें स्वार्थ पर जबरदस्त कुल्हाड़ा चलाया जाता है। देव समाज में प्रवेश किये हुए ही एक एक जन उत्पन्न होते रहे है, कि जिनमें कई अधिकारी आत्मा भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से प्रभावित होकर फूट पड़ते हैं, और रोते हुए पुकार उठते हैं, कि हाय! उन्होंने अपना जीवन स्वार्थ में रह कर नष्ट कर लिया।

देव समाज जो यह अनोखा कार्य कर रही है, वह क्यों? वह इसलिए कि देव समाज ने आत्मिक जगत् के सूर्य भगवान देवात्मा से जन्म पाया है, और उनसे ही पालना लाभ की है। देव आत्मा अपने अनोखे देव प्रभावों से कुल मिथ्याओं और पापों को नष्ट करने की सामर्थ्य रखते है। और उन्हीं देव प्रभावों के द्वारा ही अधिकारी आत्माओं के न केवल नैतिक जीवन को ऊंचा बनाते है, किन्तु परोपकार का जीवन भी प्रस्फुटित कर देते हैं। आत्मिक नियमों को पूरा करने से यहां सच्ची करामातें उत्पन्न होती हैं। इन आत्मिक नियमों का देवात्मा ने ही पूर्ण ज्ञान लाभ किया है और यही अमूल्य आत्मिक ज्ञान दुनियां को दिया है। इसी ज्ञान का नाम सत्य धर्म का ज्ञान है। इस सत्य ज्ञान को लेकर ही देवात्मा ने सत्य धर्म का ज्ञान दिया है, देव समाज ने न केवल सत्य धर्म का ज्ञान पाया और प्रकाश किया है, किन्तु देव प्रभावों से भरपूर होकर अधिकारी आत्माओं के मिथ्या विश्वासों और पापों को नष्ट करना आरम्भ किया है। यह अनोखा कार्य केवल देव समाज में ही होता है। और किसी जगह हो नहीं सकता। इसलिए मिथ्या और पाप के शोलों में जलते हुए मनुष्यों के लिए यदि कोई आशा और जीवन का स्थान है, तो वह देव समाज है, काश! अधिकारी आत्मा ऐसी अनोखी समाज से अपना सम्बन्ध स्थापन करके अपना अधिक से अधिक कल्याण साधन कर सकें।

बरसी की सभा

एक अति उच्च शिक्षित, सभ्रान्त, सुसभ्य सुयोग्य, प्रायः आदर्श भारतीय नारी ने अपने परलोक वासी धर्मपति के लिए अपने स्नेह, सम्मान वा याद और समर्पण से प्रेरित होकर इस विशेष प्रोग्राम का आयोजन हैदराबाद (दक्षिण भारत में रखा)। यह सौभाग्यशाली महिला हमारी सम्मानीय श्रीमति डाक्टर पुष्पा जी बंसल पी. एच. डी. डीलिट (अध्यक्ष हिन्दी विभाग हैं) उनके माननीय पति डाक्टर राजकुमार जी बंसल, नेत्र विशेषज्ञ थे, जिनका सम्बन्ध देव समाज के एक पुराने माननीय वा जाने माने परिवार नारायणगढ़ से था। जो श्रीमान लक्षमण दास जी के पोते और श्रीमान रामचन्द्र जी Advocate के सुपुत्र थे।

देव समाज में यह एक विशेष परिवार रहा है, परन्तु राजकुमार जी के परिवार की एक बहुत बड़ी विशेषता उनकी वा उनके परिवार की उपलब्धियां हैं। स्वयं डाक्टर साहिब रोहतक में प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ रहे हैं। जैसे कि पहले लिखा है, श्रीमति डाक्टर बंसल पी. एच. डी. डी लिट हैं। बड़ी बेटी ने मैट्रिक में, बी. ए. में स्कॉलरशिप लिया, एम. ए., एम. फिल करके लैक्चरर नियुक्त हुई। छोटी बेटी ने रोहतक में फर्स्ट गोल्ड मैडल जीता, फिर एम. ए की जर्नलिज़्म की। बेटे अशीष ने रोहतक मैडिकल कालिज से एम. बी. बी. एस की (स्वर्ण पदक लेकर) फिर नेत्र रोग चिकित्सा में एम. एस. किया, तत्पश्चात हैदराबाद में विश्व प्रसिद्ध एल. वी. प्रसाद आई इन्स्टीट्यूट में एक वर्ष फैलोशिप करके वहीं कन्सलटैन्ट के पद पर नियुक्त हो गए और विदेशों में जाकर भी देश का सम्मान बढ़ाया। उनकी धर्मपत्नी सोनिया बंसल इक्नौमिक्स में पी. एच. डी है, पंजाब विश्वविद्यालय से इन्होंने बी. ए. आनर्ज़ में और एम. ए. में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। एक और पदक उन्हें कला से सम्बन्धित मिला, तीन गोल्ड पदक लेकर, नौकरी न करके उन्होंने अपनी सेवाएं परिवार को समर्पित कर दी हैं। इस प्रकार दिल वा दिमाग के स्तर पर यह विशेष परिवार है। उनका पोता एम. बी. बी. एस. करके एम. डी. कर रहा है। पोती एम. बी. बी. एस के दूसरे वर्ष में मनीपाल में पढ़ रही है।

डा० श्रीमति बसंल और परिवार की हृदय गत इच्छा थी कि डाक्टर साहिब की बरसी देव समाज विधि से मनाई जाए। इस उपलक्ष्य में उन्होंने माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी, सैक्रटरी, देव सामज(G), से प्रार्थना की कि वह हैदराबाद में आकर इस अयोजन को सम्पन्न करें और अपनी धर्म पत्नी को भी साथ अवश्य लेकर आएं। इसके लिए उन्होंने दोनों के लिए हवाई जहाज़ की टिकटें एडवांस में ही भेज दी। वहां पर भी रहने का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। श्री अकबरपुर से श्रीमान किशन सिंह जी चौहान को भी हवाई टिकट भेजी। इस प्रकार उनमें इस प्रोग्राम को लेकर बहुत उत्साह था।

9 फरवरी को धर्म सम्बन्धी हैदराबाद पहुँच गए और 10 फरवरी 2019 रविवार के दिन 11 बजे से लेकर दोपहर एक बजे तक श्रद्धांजली सभा का प्रोग्राम हैयात, फाईव स्टार होटल में रखा गया। हाल को

विशेषकर स्टेज पर फूलों का अम्बार था, फूलों से सजी इस स्टेज पर जहां दोनों वक्ता धर्मसम्बन्धियों का स्थान बनाया गया वहां परालोकवासियों के लिए भी कुर्सियां सफेद चादरें बिछाकर रखी गई। इस सभा को सुनने के लिए सैंकड़े के लगभग बहुत सुशिक्षित, सुसभ्य श्रोतागण पधारे। जिनके लिए बैठने का बहुत अच्छा प्रबन्ध था।

सर्वप्रथम कैंडलज़ जलाने के लिए धर्म सम्बन्धियों और 1-2 मान्य जनों को आमन्त्रित किया और फिर खड़े होकर "शुभाकांक्षी सकल हमारे करो आशीश यही तुम दान" नामक भजन का गान प्रार्थनाशील होकर चौहान जी ने किया बाकी जनों ने साथ दिया। इसके बाद माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने परम पूजनीय भगवान का छवि द्वारा बहुत सुन्दर हार से अर्चन किया। फिर डाक्टर राजकुमार जी को फोटो द्वारा हारों और फूलों से श्रद्धांजली भेंट की। धर्म सम्बन्धियों, परिवारिक जनों और श्रोतागणों ने बारी बारी से सम्मान प्रदर्शन किया।

उसके बाद डा० राजकुमार जी के सुपौत्र डाक्टर अमोल बंसल जी ने माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान चौहान जी को स्टेज पर आमन्त्रित किया। फिर श्रीमान किशन सिंह जी चौहान जी ने "परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएंगे" नामक भजन का पूरे जोश के साथ गान किया। उसके पश्चात माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने परलोक के सम्बन्ध में परम पूजनीय भगवान की विज्ञान मूलक सत्य शिक्षा का बहुत संक्षिप्त रूप से वर्णन किया। लगभग आधा घण्टा श्रोतागण ने बहुत शान्ति और शालीनता से इस नवीन शिक्षा की जानकारी प्राप्त की।

उसके पश्चात श्रीमान चौहान जी ने डाक्टर राजकुमार जी बंसल के विशेष जीवन के विषय में वर्णन किया कि संसार में बिरले जन अपना जीवन सफल करके जाते हैं, परन्तु डाक्टर साहिब को अपने दादा जी और पिता जी से विशेष पूंजी मिली थी, उन्होंने बहुत सीमा तक अपना जीवन सफल किया और अपने परिवार को दुनियवी तरक्की की बुलन्दियों तक पहुँचाया। चौहान जी ने गाकर सुनाया कि पराया दर्द जो समझे उसे इन्सान कहते हैं। चौहान जी ने क्या अपने भावों और क्या अपने गान से हाजरीन को मन्त्र मुग्ध किया।

उसके बाद "हे देहत्यागी सम्बन्धी हमारे" नामक भजन का गान किया गया। फिर डा० राजकुमार जी के परिवार वा स्नेही जनों ने उन्हें अपने ब्यानों द्वारा श्रद्धांजली अर्पित की। सर्वप्रथम - श्रीमति डाक्टर पुष्पा जी बंसल जी ने बहुत भावुक होकर बताया कि अपने पति को श्रद्धांजली देना और उस विषय पर बोलना किसी पत्नी के लिए बहुत कठिन है। और उनके गुणों के भिन्न उन्होंने बताया कि मैंने जिन्दगी में जो भी उपलब्धियां की हैं, मैं समझती थी मैंने की है, परन्तु आज जब विचार करती हूं तो समझ में आता है, कि मैं अपने पति के सहयोग, मार्ग दर्शन और पग पग पर सहायता के बिना कुछ नहीं कर सकती थी। (वास्तव में अपने उदगार उन्होंने डा० साहिब जी की जीवनी लिखकर प्रगट किए हैं।)

डा० आशीष जी (सपुत्र) उन्होंने बताया कि पापा हमेशा चाहते थे कि जो भी काम करो, निष्ठापूर्वक

पूरा मन लगाकर करो और जहां भी आप किसी की सहायता कर सकते हो पीछे न हटना। उनके सिद्धान्तों ने सदा मेरा मार्ग दर्शन किया है। उसके बाद उनकी धर्मपत्नी, सोनिया जी, सपुत्र डाक्टर अमोल जी पुत्री आस्था ने अपने दादा जी के प्रति अपने स्नेह और सन्मान का प्रकाश किया। डाक्टर साहिब की छोटी बेटी, उनके दोनों सपुत्रों और पुत्रवधू ने भी अपने भाव प्रगट किए। श्रोतागण में से कई सज्जनों ने डाक्टर साहिब के विशेष गुणों और सेवाओं का वर्णन किया।

इस प्रकार श्रद्धांजली देने के बाद डाक्टर साहिब की पोती, बीबी आस्था जी ने डाक्टर साहिब के जीवन पर उनकी प्रिय धर्म पत्नी श्रीमति डा० पुष्पा जी बंसल द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन करने के लिए माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान चौहान जी को निमन्त्रित किया, उन्होंने बहुत ही सुन्दर पुस्तक का विमोचन किया, जो पुस्तक प्रिय धर्म पत्नी के उदगारों और सुन्दर छपाई से सुसज्जित है।

इस प्रकार बहुत ही विधि पूर्वक सारा प्रोग्राम समाप्त हुआ और उसके बाद उसी होटल में सब के खाने का बहुत उत्तम प्रबन्ध था। सब उपस्थित जनों ने जहां सारे प्रोग्राम से लाभ उठाया, वहीं स्वादिष्ट भोजन का भी आनन्द प्राप्त किया।

रात को डाक्टर श्रीमति बंसल और डाक्टर आशीष जी ने 10,000 रूपये श्री अकबरपुर के लिए और 10,000 देव समाज (G) के लिए दान में दिए। 5000 रूपये चौहान जी को उनके टैक्सी आदि के खर्चे के लिए दिए। 5000 रूपये वह श्रीमान बलदेव सिंह जी को भी देना चाहते थे जो बहुत बहुत आग्रह करके उन्होंने लेने से इन्कार किया, परन्तु उनके भाव बहुत प्रशंसनीय थे। इन दो दिनों में उन्होंने धर्म सम्बन्धियों को अपनी सेवाओं से लाद दिया। इसके लिए जितना भी धन्यवाद दिया जाए कम है।

(एक सेवक)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

पेट में होने वाले कीड़े कर सकते हैं - आंत में घाव

पेट में कीड़े पड़ जाएं तो यह बहुत ही दुखदायी होता है। यह समस्या सबसे अधिक बच्चों में होती है लेकिन बड़ों की आंतों में भी कीड़े हो सकते है। ये लगभग 20 प्रकार के होते हैं जो अंतड़ियों में घाव पैदा कर सकते हैं। इसके कारण रोगी को बेचैनी, पेट में गैस बनना, दिल की धड़कन असमान्य होना, बदहजमी, पेट में दर्द, बुखार जैसी कई प्रकार की समस्याएं होती है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाईजेशन के मुताबिक दुनिया में 241 मिलियन बच्चों को पेट में कीड़ों की समस्या है, जिनकी उम्र 1 से 14 साल के बीच है। बच्चों के पेट में कई किस्म के कीड़े पाए जाते है। जैसे : टेपवर्म्स ए. थ्रेडवर्म्स और पिंववर्म्स इत्यादि। कई स्टडीज से पता चला कि बच्चों के पेट में कीड़े महत्वपूर्ण पोषक तत्वों को सोख लेते हैं, जो कि बच्चों के विकास और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित होता है। ऐसे बहुत से कारण है जिसकी वजह से बच्चों के पेट में ये कीड़े पाए जाते हैं। खाना ठीक से न खाना और अशुद्ध पानी का सेवन करना, कुछ कारणों में से एक है। बच्चों को साफ न रखना भी एक कारण हो सकता है। इसकों बढ़ने से रोकने के लिए स्वयं को साफ और गर्म रखें जिससे इन कीड़ों के अंडों को खत्म किया जा सके। साथ ही अपने शरीर को साफ रखें और अपने खाने-पीने का विशेष खयाल रखें।

सेहत पर असर शारीरिक विकास

पेट के कीडे जरूरी पोषक तत्वों को सोख लेते है जिससे दस्त की शिकायत होती है।

पेट के कीड़ों की वजह से खून की कमी हो जाती है, जिसे एनीमिया कहते हैं।

कीड़े मेजबान के पेट के टिशूज को खराब कर देते है।

वायरस की पेट में मौजूदगी पेट की कोशिकाओं को नष्ट कर देती है।

पेट में कीड़ों की वजह से बच्चों का इम्यून सिस्टम भी कमजोर हो जाता है और उनका वजन भी सामान्य बच्चों से कम होता है।

मानसिक विकास

एकाग्रता की कमी :-

खराब स्कूली प्रदर्शन : पीड़ित बच्चे ध्यान से नहीं पढ़ पाते जिसकी वजह से उनका स्कूली प्रदर्शन खराब होने लगता है।

इम्पेयर्ड कॉग्निशन : इस बिमारी से बच्चों की याददास्त

नजरअंदाज़ न करें

नींद न आना भूख न लगना वजन का गिरना उल्टियां पेट दर्द दस्त

क्या है इलाज

रोगी को खाने में रुचि नहीं होती और उसे चक्कर भी आते हैं। गंदगी के कारण ही पेट में कीड़े होते हैं। अशुद्ध और खुला भोजन करने वालों को यह समस्या

अधिक होती है। घरेलू उपचार के जरिए इस समस्या का इलाज किया जा सकता है।

प्याज का रस :– यह बच्चों के पेट से कीड़ों को साफ करने में मदद करता है। कुछ प्याज के टुकड़ों को पीसकर रस बच्चे को खाली पेट पिला दीजिए।

अजवायन 2 से 3 दिन :– अजवायन का सेवन करने से पेट में कीड़े मर जाते हैं। इसके लिए अजवायन के आधा ग्राम चूर्ण की उतने ही गुड़ में गोली बनाकर दिन में तीन बार मरीज को दें। अजवायन में एंटी बैक्टीरियल तत्व पाए जाते हैं जो कीड़ों को समाप्त कर देते हैं। अजवायन का सेवन 2-3 दिन करने पर कीड़े पूरी तरह से समाप्त हो जाएंगे।

अनार के छिलके :– बच्चों ओर बड़ों दोनों में पेट के कीड़े हो जाएं तो यह बहुत ही फायदेमंद उपचार है। अनार के छिलकों को सुखाकर इसका चूर्ण बना लीजिए। यह चूर्ण दिन में तीन बार एक-एक चम्मच लीजिए। कुछ दिनों तक इसका सेवन करने से पेट के कीड़े पूरी तरह से नष्ट हो जाते हैं।

नीम के पत्ते :– नीम के पत्तों का सेवन करने से पेट की हर तरह की समस्या दूर हो जाती है। नीम के पत्ते एंटीबायोटिक होते हैं जो पेट के कीड़ों को नष्ट कर देते हैं। नीम के पत्तों को पीसकर उसमें शहद मिलाकर लेने से जल्दी फायदा होता है और कीड़े नष्ट हो जाते हैं। सुबह के वक्त इनका सेवन करना अधिक फायदेमंद होता है।

तुलसी की पत्तियां :– पेट में कीड़े होने पर तुलसी के पत्तों का एक चम्मच रस दिन में दो बार पीने से पेट के कीड़े मरकर मल के साथ बाहर निकल जाते हैं। इसका सेवन करने से आंत पूरी तरह से साफ हो जाती है और पेट में गैस और कब्ज की भी शिकायत नहीं होती है। तुलसी की पत्तियां पेट के कीड़ों को मिटाने में लाभदायक हैं।

पृष्ठ 2 का शेष

होता, और नहीं हो सकता। हज़ारों मनुष्य ऐसी अधर्म प्रकृति को लेकर जन्म लेते हैं, कि उन के आत्माओं में कोई उच्च परिवर्तन आ ही नहीं सकता और जो ऐसी प्रकृति को लेकर उत्पन्न होते हैं, कि जिन में उच्च परिवर्तन आ सकता है, उन्हें नीच गतियां की प्रबल धार से रोकने और उन की गति को बदलने के लिए किसी ऐसे महा उच्च शक्ति दाता से जुड़ने की आवश्यकता है, कि जिस की शरण ले कर और जिस के प्रभावों को पाने से वह ऐसा परिवर्तन लाभ कर सकते हैं। जब तक किसी ऐसी उद्धारिणी और उच्च गति दायिनी शक्ति के भण्डार जीवन दाता का आश्रय प्राप्त नहीं, तब तक पापी आत्माओं का विविध नीच गतियों से उद्धार और उनमें उच्च गतियों का विकास नहीं हो सकता।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

ऐ नेकों की सोसाइटी आदर्श तू समाज है।

नीच रागों का दमन, उच्च भावों की लगन;
देवगुरु का प्रेम पन, यकता तेरा मेराज है। (1)

जगत से मेटकर गुनाह, करके झूठ को फ़नाह;
सत्य और हित को दे पनाह, देवत्व का लाती राज है। (2)

तू बरकतों की कान है, नायाब तेरा दान है;
सब से अनोखी शान है, हिन्दोस्तां की लाज है। (3)

मरते हुए बचा दिए, वीरान घर बसा दिए;
मग़रूर सर झुका दिए, बेमिसल तेरा काज है। (4)

अपनी गठन में जान में, शिक्षा के इमत्हान में;
और काम के मैदान में सानी न तेरा आज है। (5)

इन्जन है तू सुधार का, रिश्तों के कुल बिगाड़ का;
दिल के क्षयी बुखार का, तू पुख़ता इलाज है। (6)

है आला तेरी दीक्षा, है रूह की तुझमें रक्षा,
विज्ञान मूलक शिक्षा, हितकर हर एक रिवाज है। (7)

है बढ़ता जाता रात दिन, तेरा हमारे सिर पर ऋण
है देना बहुत ही कठिन, जो मूल का व्याज है। (8)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts